

# कपास नई खोज



भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: [www.cicr.org.in](http://www.cicr.org.in)

अंक: 4 खंड: 4 अप्रैल 19-25, 2015

## बैठक में सहभागिता

डॉ. के.आर. क्रांति, निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर, डॉ. डी. मोंगा, प्रधान, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, सिसी और डॉ. ब्लैज डिसौसा, प्रधान, फसल उत्पादन विभाग ने एन.बी.पी.जी.आर., न्यू दिल्ली में दि. 20.4.2015 को डॉ.जे.एस.संधू, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) की अध्यक्षता में नाइजीरियाई प्रतिनिधिमंडल के साथ एक पारस्परिक विचार-विमर्श में भाग लिया।

डॉ. के.आर. क्रांति, निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर, डॉ. संध्या क्रांति, प्रधान, फसल सुरक्षा विभाग, डॉ. ब्लैज डिसौसा, प्रधान, फसल उत्पादन विभाग एवं डॉ. एम.वी. वेणुगोपालन, प्रधान, पी.एम.ई. ईकाई ने बी.सी.आई के कार्यशाला में भाग लिया और दि. 22.4.2015 को कपास में उच्च घनत्व रोपण प्रणाली एवं बेहतर कपास प्रबंधन के तरीके के संबंध में जानकारी और प्रौद्योगिकियों को हितधारकों के साथ साझा।

## प्रशिक्षणों

अग्रोवान (सकाल संस्करण) द्वारा दि. 20.4.2015 को कनोलिबारा गांव (हिंगना जिला, नागपुर) में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं इस कार्यक्रम में लगभग 95 किसानों ने भाग लिया। डॉ. आर.बी. सिंगनडुपे, प्रमुख वैज्ञानिक, (कृषि विज्ञान) ने कृषि आय में सुधार के लिए कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी तथा संबंधित मुद्दों पर कनोलिबारा एवं उसके आसपास के गांवों के किसानों को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों और ग्राम पंचायत कनोलिबारा के सरपंच ने सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लिया और उनके प्रश्नों सुलझाये गये।

डॉ. आर.बी. सिंगनडुपे प्रमुख वैज्ञानिक, (कृषि विज्ञान) ने दि.24.4.2015 को कृषि राज्य सरकार विभाग, महाराष्ट्र के 20 (बीस) अधिकारियों को कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी (एच.डी.पी.एस) पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम वसंतराव नाईक राज्य कृषि विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान (वनामती) द्वारा नागपुर में आयोजित किया गया था।

मोहगाँव जिला - मंडला, मध्यप्रदेश के पंद्रह वर्धमान किसानों ने दि.24.4.2015 को केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर का दौरा किया जिसमें उत्पादन प्रौद्योगिकी और अन्य संबंधित विषयों उन्हें करने के लिए प्रदान किया गया। इस दौरा कार्यक्रम मध्यप्रदेश सरकार द्वारा चलाई 'मुख्यमंत्री खेती तीर्थ अभियान' के अधीन विकास अधिकारी, मोहगाँव और जिले - मंडला द्वारा आयोजित किया गया।

## वैज्ञानिक साहित्य का स्कैन

**घातक कीड़े : कैंसर अनुसंधान कनारहेब्डिटिस एलिगेंस द्वारा क्या सीख सकते हैं।**

साईटो आर.एम. वेंडेन ह्यूवेल एस.

मैसे चुसेट्स जेनरल हॉस्पिटल कैंसर केंद्र, भवन 149, 13 वी गली, चार्ल्सटाउन, एम.ए. 02129 यू.एस.ए.

सूत्रकृमि सी. एलिकेंन्स के विकास प्रक्रियाओं जीन कार्यों के मार्ग द्वारा नियंत्रित हैं जो स्तनधारियों में प्रयोगित होनेवाले के समान हैं। इसलिए सी. एलिकेंन्स का आनुवंशिक अध्ययन ने इन ढांचे के नियामक रास्ते के निर्माण हेतु मदद किया। ऐसे आनुवंशिक रास्ते के भीतर मानव जीन के कई होमोलोग्स जो कैंसर में उत्परिवर्तन के लिए लक्ष्य हैं वे विशिष्ट चरणों में कार्य करते हैं। इस तरह सी. एलिगेंस के अध्ययन मानव ओंकोजीन और ट्यूमर शामक के कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण सुराग प्रदान की है। मानव कैंसर जीन के कार्य पद्धति एवं संकेत के परिवर्तनशील प्रभाव समझना बहुत महत्व कार्य है। यह जानकारी से पता चलता है की सेल परिवर्तन प्रक्रिया में किस तरह की आणविक परिवर्तन का योगदान है। इसके अलावा, अतिरिक्त कैंडिडेट ओंकोजीन और ट्यूमर दमन जीन की कार्यात्मक भागीदारों की पहचान से पता किया जा सकता है। इसके अलावा, जीन कार्यों की पहचान द्वारा चिकित्सकीय हस्तक्षेप के लिए संभावित ठिकानों की संख्या बढ़ जाती है क्योंकि किसी एक विभिन्न जीन को अवरुद्ध करना संकेत पारगमन के साथ हस्तक्षेप कर सकता है। विभिन्न मॉडल प्रणाली में ऐसे ही दृष्टिकोण करने से जीन कार्यों के रास्ते को सुलझाना आसान है। कई मॉडल का उपयोग करने से क्षेत्र प्रत्येक की ताकत का लाभ लेता है। सबसे शक्तिशाली आनुवंशिक पशु प्रणालियों के रूप में, सी. एलेगन्स नई स्तनधारी संकेतन घटकों प्रकट करने के लिए जारी रहेगा। इसके अलावा, अब सी. एलेगन्स जिनोम अनुक्रम पुरा होने से एक बढ़ती हुई संख्या शोधकर्ताओं सूत्रकृमि में मानव रोग जीन की होमोलोग्स को खोजने के लिए एवं कृमि प्रकार में जीन कार्य का विश्लेषण करने की संभावना है। देवा स्क्रीन में इस जानवर के महान क्षमता के साथ कैंसर अनुसंधान में गहरा होने की भविष्यवाणी सरल है।

संदर्भ: साईटो आर.एम एवं वेनडेन ह्यूवेल (2002), कैंसर निवेश, 20(2):264-75

## 'कपाशी उत्पादनवाढीसाठी जागरूकता आवश्यक'

जमिनीची योग्य मशागत, माती परीक्षण, देशी सुधारित वाणांचा वापर, लागवडीचा योग्य कालावधी, लागवडीतील योग्य अंतर, पाणी व्यवस्थापन, एकात्मिक खत व कीड-रोग व्यवस्थापन अशा सुधारित पद्धतीचा अवलंब कपाशीची एकरी उत्पादकतावाढीस पूरक ठरतो, असे प्रतिपादन केंद्रीय कापूस संशोधन केंद्राचे तज्ज्ञ डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे यांनी केले.

कान्होलीबारा (ता. हिंगणा, जि. नागपूर) येथे 'अॅग्रोवन' चर्चासत्रात ते बोलत होते. सरपंच आरती पुरुषोत्तम कुकडे या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी होत्या. उपसरपंच सुनील गव्हाळे,

कृषी सहायक प्रशील जिभकाटे, अरुण आदमणे, श्रेयश बाणाबाकोडे, आनंद बावणे, रमेश तोटे, पुरुषोत्तम तोटे, नागसेन पाटील, रमेश रामटेके, सदाशिव निमसडे यांच्यासह मान्यवर व शेतकऱ्यांची या वेळी उपस्थिती होती. डॉ. सिंगनधुपे यांनी कापूस व्यवस्थापनातील बारकावे शेतकऱ्यांना समजावून सांगितले. मोहित अॅग्रो इंडस्ट्रीजचे पीक संरक्षण तज्ज्ञ कमलेश झोडे यांनीही उपस्थित शेतकऱ्यांना कापूस लागवड ते काढणीपर्यंतच्या प्रत्येक टप्प्यावरील व्यवस्थापनाविषयी माहिती दिली. अॅग्रोवन प्रतिनिधी रूपेश वंडे यांनी प्रास्ताविक केले. सुनील गव्हाळे यांनी आभार मानले.



कान्होलीबारा, जि. नागपूर : अॅग्रोवन चर्चासत्रामध्ये मार्गदर्शन करताना डॉ. आर. बी. सिंगनधुपे.

## केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर में नए वैज्ञानिक का ग्रहण



डॉ. डी.वी. पाटील, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन) ने दि. 21.4.2015 को राष्ट्रीय अजैविक तनाव प्रबंधन संस्थान, मालेगांव, बारामती पुणे जिला से स्थानांतरित के फलस्वरूप केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर में कार्यभार ग्रहण किया ।

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपूर

प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोकटे-नाखडेकर

संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन

जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रूपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार

हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश

निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-4, खंड-4, 2015, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन <http://www.cicr.org.in/News Letter.html> में उपलब्ध है ।

कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज-के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र. कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपूर- 441 108.

दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com

